दलहनी फसलों को दाल बनाकर बेचें तो दोगुना लाभ कृषि वैज्ञानिक मिनी दाल मिल उत्पादक समूह गठित कर रहे जनेकृविवि के वैज्ञानिकों की अनूठी पहल

जबलपुर 22 अक्टूबर। जवाहरलाल नेहरू कृषि विष्वविद्यालय स्थित संचालनालय विस्तार सेवायें के कृषि विज्ञान केन्द्र, उमरिया के वैज्ञानिकों द्वारा यहां मिनी दाल मिल आधारित कृषक उत्पादक समूह गठित किए जा रहे हैं, जिसका उद्देष्य दलहनी फसलों की उपज को दाल बनाकर बेचना है। इससे किसान की आय सीधे दोगुनी हो जायेगी। मध्यप्रदेष का उमरिया जिला आदिवासी बाहुल्य है। जिसमें दलहनी फसलों का रकवा 3०,००० हेक्टेयर है। दलहनी फसलों में तुअर एवं चना मुख्य रूप से उगाई जाती है, इसके साथ-साथ उड़द, मसूर, मटर एवं ग्रीष्म कालीन मूंग का उत्पादन भी स्थानीय कृषकों द्वारा लिया जाता है, जिसका उत्पादन 25000 टन के लगभग होता है। कृषकों द्वारा अपनी उपज का 80 प्रतिषत भाग लगभग 20000 टन बगैर दाल बनाए सीधा ही व्यापारियों को बेच दिया जाता है, जिससे उन्हें मात्र 100 करोड़ रूपये मिलता है। यदि दलहनी फसलों की उपज को मिनी दाल मिल द्वारा प्रसंस्करित कर दाल बनाकर बाजार में विक्रय किया जाता है तो 150 से 200 करोड़ रूपये मूल्य कृषकों को प्राप्त होगा जो कि पूर्व में प्राप्त उपज के मूल्य से 1.5 से 2.0 गुना होगा। जिसका लाभ सीधे कृषकों को अपने समूह के माध्यम से होगा। मिनी दाल मिल मषीन का मूल्य 141000 रूपये है एवं चलाने का खर्च 100 रूपये प्रति क्विंटल के लगभग होगा। जिस उपज को कृषक बाजार में 5000 रूपये प्रति क्विंटल बेचते हैं वह दाल बनाकर 9900 रूपये प्रति क्विंटल दाल के रूप में विक्रय कर सकते हैं। यह एक अनूठा प्रयास कृषि विज्ञान केन्द्र, उमरिया के वैज्ञानिकों द्वारा नवयुवकों हेतु रोजगार एवं आय बढ़ाने का बहुत ही सार्थक प्रयास है।